ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—26/04/2021 महायज्ञ का पुरस्कार -यशपाल जैन

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

<u>महायज्ञ का पुरस्कार</u>

-यशपाल जैन

कुत्ता टुकुर-टुकर उनकी ओर देख रहा था। सेठ उसकी तरफ से आँखें न हटा सके। सहसा उनके मन में आया, मेरा काम तो पानी से भी चल सकता है। इस बेचारे मूक और बेबस जीव को एक रोटी और मिल जाए तो फिर निश्चय ही इसमें ताकत आ जाएगी जिससे कि किसी गाँव तक पहुँच सके।

सेठ ने अधिक सोच-विचार नहीं किया और अंतिम रोटी भी कुत्ते को खिला दी। स्वयं एक लोटा जल पीकर तथा थोड़ा विश्राम कर अपना रास्ता पकड़ा। दीया जले वे कुंदनपुर पहुँचे। धन्नासेठ की हवेली पर पहुँचे तो उन्होंने उठकर सेठ का अभिवादन किया। फिर सेठ ने कहा, “संकट में हूँ और एक यज्ञ आपके हाथ बेंचने आया हूँ।"

इतने में सेठानी ने कहा, “सुनो सेठ ! यज्ञ खरीदने के लिए हम तैयार हैं। पर तुम्हें अपना महायज्ञ बेंचना होगा।”
~~~~~~~~~~

"महायज्ञ।"

"हाँ, वही जो तुमने आज किया है।" सेठ बड़े आश्चर्य में पड़े, "महायज्ञ और आज।" वे समझ गए कि सेठानी उनका मज़ाक उड़ा रही है। उन्होंने विनम्र भाव से कहा, "आप आज की कहती हैं, मैंने तो कई बरसों से कोई यज्ञ नहीं किया। मेरी स्थिति ऐसी नहीं थी।' सेठानी ने गंभीर मुद्रा से कहा, "नहीं सेठ, आज तुमने जो यज्ञ किया है वह यज्ञ नहीं, महायज्ञ है। उसे बेचोगे तो हम खरीदेंगे, नहीं तो नहीं।"

सेठ विस्मित-विमूढ़ से हो गये। उन्हें निश्चय हो गया कि इन लोगों को यज्ञ खरीदना नहीं है, इसलिए ऐसी बातें की जा रही हैं। सेठानी ने कहा, "बोलो सेठ, राजी हो। " सेठ ने खिन्न भाव से कहा, "सेठानी जी, हँसी छोड़िए । काम की बात कीजिए। बरसों से मैंने कोई यज्ञ नहीं किया है। आप आज की कहती हैं।" फिर सेठानी ने सेठ को रास्ते में उनके द्वारा कुत्ते के साथ किए गए व्यवहार के बारे में बताया। यह सुनकर, सेठ मानों आसमान से नीचे गिरे। सोचा, भूखे को अन्न देना तो सभी का कर्त्तव्य है, उसमें त्याग क्या?

पास की धर्मशाला के चबूतरे पर सेठ ने भूखे पेट जैसे-तैसे रात बितायी और पौ फटे वहाँ से चलकर शाम को अपने घर आ पहुँचे। सेठानी बड़ी-बड़ी आशाएँ लगाए बैठी थी। सेठ को रोते लौटते देखकर आशंका से काँप उठीं। बोलीं, "क्यों, धन्नासेठ मिले?"

सेठ ने आद्योपांत सारी कथा कह सुनायी। कथा सुनकर सेठानी की समस्त वेदना जाने कहाँ विलीन हो गयी। हृदय उल्लास से भर आया। विपत्तियों के भार से दबे होने पर भी सेठ ने धर्म नहीं छोड़ा। आप धन्य हैं, सेठ के चरणों की रज मस्तक पर लगाते हुए बोलीं, "हम धीरज रखें, भगवान सब भला करेंगे।"

रात का अंधकार फैलता जा रहा था। सेठानी उठकर दीया जलाने के लिए दालान में आयी तो रास्ते में किसी चीज़ की ठोकर लगी। गिरते-गिरते बचीं, सँभलकर आले तक पहुँची और दीया जलाकर नीचे की ओर निगाह डाली तो देखा कि

दहलीज के सहारे एक पत्थर ऊँचा हो गया है जिसके बीचो-बीच एक लोहे का कुंदा लगा है। इसी कुंदे से उन्हें ठोकर लगी थी।

शाम तक तो वहाँ पत्थर बिलकुल उठा भी नहीं था। अब यह अकस्मात् कैसे उठ गया? सेठानी भौंचक्की-सी खड़ी रहीं। फिर सेठ को बुलाकर बोलीं, "देखो तो..... यह पत्थर यहाँ कैसे उठ गया ?"

सेठ भी अचरज में पड़ गये। दीए की टिमटिमाती रोशनी में उन्होंने ध्यानपूर्वक देखा तो पता चला कि वह तो किसी चीज़ का ढकना है। आखिर यह माज़रा क्या है ? सेठ ने कुंदे को पकड़कर खींचा तो पत्थर उठ आया और अंदर जाने के लिए सीढ़ियाँ निकल आयीं।

सावधानी से सेठ और सेठानी दीया हाथ में लिए उतरे। कुछ सीढ़ियाँ उतरते ही इतना प्रकाश सामने आया कि उनकी आँखें चौंधियाने लगीं। सेठ ने देखा, वह एक विशाल तहखाना है जो जवाहरातों से जगमगा रहा है।

देव की इस माया का रहस्य उनकी समझ में नहीं आया। दोनों निःस्तब्ध खड़े थे। तभी अदृश्य, पर स्पष्ट स्वर में उन्हें सुनाई दिया, "ओ सेठ! स्वयं भूखे रहकर, अपना कर्त्तव्य मानकर प्रसन्नचित्त तुमने मरणासन्न कुत्ते को चारों रोटियाँ खिलाकर उसकी जान बचायी, उस महायज्ञ का यह पुरस्कार है। "

सेठ और सेठानी इस दिव्य वाणी को सुनकर कृतकृत्य हुए। वहीं धरती पर माथा टेककर उन दोनों ने भगवान के चरणों में प्रणाम किया।

****